International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 3, March 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

रम णका गुप्ता की आत्मकथा 'आपहुदरी' में स्त्री-स्वातंत्र्य

डॉ. सुनीता सक्सेना
अ सस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी वभाग
श्यामलाल महा वद्यालय (सांध्य)
दिल्ली वश्व वद्यालय

हिन्दी साहित्य में रम णका गुप्ता की मुख्य पहचान एक स्त्री, द लत एवं आदिवासी वमर्शकार के रूप में रही है। उनकी आत्मकथा 'हादसे' हिन्दी जगत में काफी च र्चत रही थी। इसके बाद **2014-15** में उनकी आत्मकथा की अगली कड़ी 'आपहुदरी' नाम से प्रका शत हुई। अपनी इस आत्मकथा में उन्होंने बचपन से आरंभ करते हुए धनबाद तक की यात्रा का वस्तारपूर्वक अंकन कया है जिसमें उनके जीवन के कई पहलू समाहित हैं। रम णका गुप्ता के बहुआयामी व्यक्तित्व के कई क्षेत्र यथा राजनीति, समाज-सेवा, साहित्य आदि इसमें आए हैं। इन सभी क्षेत्रों में कए गए संघर्षो का अंकन उन्होंने इसमें कया है।

रम णका गुप्ता का जन्म पंजाब के सुनाम में हुआ था। उनके पता डॉक्टर थे और पटियाला रियासत (सेना) में कार्यरत थे। उनके नाना पटियाला रियासत के एक बड़े जमींदार थे। यह एक सामंती समाज था। सामंती समाज की प्रकृति के अनुरूप समाज में पतृसत्तात्मक प्रवृत्तियों का बोलबाला था। ऐसे समाज में पुरुषों को जहाँ तमाम तरह की स्वतंत्रताएँ एवं अ धकार प्राप्त थे, वहीं स्त्रियों पर अनेक तरह के बंधन लगे हुए थे। उनके जीवन से संबं धत सारे निर्णय भी पुरुष ही लया करते थे। वे हर स्तर पर रोकटोक की शकार थीं। कन्तु इस समाज में भी ले खका रम णका गुप्ता की प्रकृति कुछ भन्न थी। अपनी साहसी प्रकृति के कारण वे पतृसत्तात्मक समाज द्वारा आरो पत कायदे-कानूनों के अनुसार चलने के लए तैयार नहीं थीं। चाहे उन्हें कतना भी वरोध झेलना पड़ता हो, वे रूढ़िवादी मान्यताओं को तोड़ती हैं और अपनी इच्छा के अनुरूप कार्य करती हैं। उनकी माँ जब उन्हें सर ढ़ककर चलने के लए कहती हैं तो वे इसका पूरी तरह प्रतिकार करती हैं-

"नहीं ढंकूगी सर क्यों ढकूं? क्या लड़के सर ढक कर चलते हैं? र व को क्यों नहीं कहती अपना सर ढकने को? मैं कोई उससे कम हूँ क्या? नाना जी के हवेली और क्लब में इतनी मेमें आती हैं, वे 'चुन्नी' (दुप ा) नहीं ओढ़ती। मैं क्यों नहीं उनकी तरह बिना 'चुन्नी' ओढ़े चल सकती?"

"यह अच्छे घर की लड़ कयों का रिवाज नहीं है।" माँ मुझे समझाते हुए कहती।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 3, March 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

"मुझे नहीं चाहिए अच्छे घर के रिवाज। मैं नहीं बनूंगी अच्छे घर की लड़की। यह सब पुरानी बातें हैं। मैं नहीं मानूंगी कोई पुरानी बात। मैं अपना ही रिवाज़ चलाऊँगी, खुद अपने आप। मैं जोर देकर कहती"1

उनके ऐसे ही वरोधी तेवरों के कारण उन्हें 'आपहुदरी' कहा जाने लगता है जो क इस आत्मकथा का शीर्षक भी है। पंजाबी भाषा के इस शब्द का अर्थ है-जिद्दी लड़की।

सामंती समाज में स्त्री भोग्य वस्तु के रूप में देखी जाती है। एक से अ धक स्त्रियों से संबंध रखना उसकी मर्दानगी का प्रमाण माना जाता है। सामंती समाज में स्त्रियों की भी मान सकता ऐसी बना दी जाती थी क वे भी ऐसे संबंध को सहज ही स्वीकार कर लेती थीं। ले खका के परिवार में भी सामंती समाज की ये प्रवृत्तियाँ वद्यमान थी जिसका वर्णन उन्होंने अपनी आत्मकथा में कया है। ले खका ने अपने पता के बारे में बताया है क उनके पता अपनी पत्नी यानि ले खका की माँ से बहुत प्रेम करते थे ले कन उन्हें जब भी मौका मलता दूसरी स्त्रियों से भी संबंध बनाते रहते थे। ले खका के नाना सामंती व्यवस्था के चरम रूप थे जिन्होंनेजिन घर में ही अपनी बेटी से ही शारीरिक संबंध बना रखा था। रम णका गुप्ता ने इस सामंती प्रवृत्ति को रेखां कत करते हुए लखा है-

"घर में औरत को आदर, प्रचुर प्रेम के चश्मे (झरने), बाहर ऐबयाशी से सराबोर सागर। औरत का दोनों रूपों में भोग। पत्नी का पावनरूप, प्रे मका का अनुराग, वारांगना की आसक्ति, पुरुष सभी का बिना अपराधबोध के उपभोग करता था। स्त्री अपराध-बोधों की पटारी थी। अपनी जरा-सी बेवफाई उसे अपनी ही निगाहों में चोर बना देती थी और चोर बनाने वाला पुरुष बेदाग रहता थ।"[2]

अपनी इस आत्मकथा में रम णका गुप्ता ने स्त्रीवादी दृष्टिकोण से पतृसत्तात्मक सामाजिक-ढाँचे को देखा परखा है, उसकी चीर-फाड़ की है। उन्होंने इसमें दिखाया है क कस तरह समाज एक स्त्री को उसके सहज रूप में नहीं बड़ी होने देता। समाज लगातार उसे बड़ी होते रहने का बोध करवाता रहता है और अपने अनुरूप ढालने का प्रयत्न करता रहता है। उसके चाल-चलन, शारीरिक वकास, सुन्दरता, रंग आदि पर समाज की दृष्टि लगी रहती है। उसकी सहज हँसी को भी समाज उसके चारित्रिक स्खलन से जोड़ देता है। समाज की हेय दृष्टि का शकार लड़ कयाँ अपना आत्म वश्वास खो देती हैं और उनके व्यक्तित्व का सहज वकास नहीं हो पाता। स्वयं ले खका भी घर-समाज में इस स्थिति का सामना करती है। रम णका गुप्ता ने इसके संबंध में लखा है-

"हेय नजरों ने हमेशा ही मुझे वच लत कया। बचपन से ही मैं आँखों की भाषा 'नजर' के माध्यम से पढ़ने में माहिर हो गयी थी। देखते ही 'नजर' को पहचान लेती थी। इस लए नजरें मुझे प्रभा वत

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 3, March 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

करती थीं। जीवन भर आँखें मेरा पीछा करती रहीं। आँखें-नजर-दृष्टि-मैं इन्हीं से अपने लए कुछ पाने को लालायित रही, भूखी रही। प्रेम-प्रशंसा, आदर-सम्मान। मैं दया-तरस-निरादर, तिरस्कार या उपेक्षा की नजरों से सदैव जूझती रही। उपेक्षा की नजरें मुझे सालती थीं। प्यार, सम्मान और स्नेहभरी नजरें मुझे सम र्पत हो जाने को प्रेरित करती थीं। मेरा नजरों से घृणा और प्यार का रिश्ता गहरा होता जा रहा था।"[3]

रम णका गुप्ता ने आपहुदरी में दिखाया है क कस प्रकार भारतीय संस्कृति में तो स्त्री-पुरुष के संबंधों को लेकर तमाम तरह के निषेध हैं, ले कन इसके वपरीत भारतीय सामंती समाज में पुरुष तमाम तरह के यौन-संबंध बनाता है। ले खका स्वयं बचपन से ही यौन उत्पीड़न से पी ड़त की जाती है। वह यथासंभव इसका प्रतिकार भी करती है। इस संबंध में उसने लखा है-

"मेरे प्रतिवाद का यही तरीका रहा है पहले झेल लेना, बाद में झुंझलाना, पछताना और आगे प्रतिरोध करना, आवृत्ति नहीं होने देना। संभवत: हर लड़की का यही तरीका है। यह तो सब समझ आ रहा है क वह सब क्या था, जिसने बचपन में ही मेरे भीतर भय, असुरक्षा और भीरुता के बीज बोने की को शश की। ये अ प्रय संस्कार मुझे नौकरों ने, संगे संबं धयों या घर आये मेहमानों ने दिए, जिनकी स्मृति मेरे वद्रोही तेवरों को उभारने में सहायक तो जरूर हुई...मेरे अवचेतन में बैठ गयी। मेरी शु चता बार-बार टूटी....इस टूटन का अपराध बोध मुझे हीनता से भरता रहा। बहुत बार में जाकर मैं इससे उबर पाई।"[4]

ले खका घर में कई ऐसे यौन-संबंधों को ल क्षत करती है जो भारतीय संस्कृति में वर्जित हैं। घर में काम करने वाले नौकर भी घर की बहुओं और बेटियों से संबंध बनाते हैं। निश्चित रूप से ऐसे वर्णनों का लक्ष्य यह दिखाना है क पतृसत्तात्मक समाज-व्यवस्था कतने पाखण्डों से युक्त है।

अपनी इस आत्मकथा में रम णका गुप्ता यह स्था पत करती हैं क 'शु चता' एक पाखंड के सवा और कुछ नहीं। 'शु चता' की भावना स्त्रियों में इस तरह से भर दी जाती है क कई बार इसके भंग होने पर स्त्रियाँ आत्मग्लानि और अपराध-बोध का शकार हो जाती हैं इसके कारण उनमें एक हीनता-ग्रं थ घर कर लेती हैं जिससे उबरना बहुत कठिन होता है। ले खका ने इस संबंध में लखा है-

"मुझे शु चता की व्यर्थता का भान तो बहुत पहले हो चुका था ले कन इस ग्रन्थि से मैं बहुत बाद में उबरी। शु चता भंग होने का दंश, अपराध बनकर जीवन भर कसकता है और इसी के कारण और जन्म-जन्मांतर तक अपरा धनी, बेवफा, वश्वासघातिनी और छिनाल कहलाती है। अगर औरत इसकी निरर्थकता पहले ही समझ जाए, तो शायद हीन-ग्रन्थि से ग्र सत होने से बच सकती है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 3, March 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

शु चता का टूटना उसे अपनी ही नज़र में गराता है, जब क पुरुष शेखी बघारता है। इसी दोहरे मापदंड को तोड़कर स्त्री मुक्त हो सकती है। शु चता के इस पाखण्ड को तोड़ने की पहल स्वयं स्त्री को ही करनी होगी।"[5]

पतृसत्तात्मक समाज-व्यवस्था में कस-कस तरह के स्त्री-वरोधी कुप्रथाओं का प्रचलन है इसका एक उदाहरण रम णका गुप्ता 'कुड़ीमार' गुरु परिवार कुप्रथा के वर्णन के माध्यम से प्रस्तुत करती हैं। उन्हें अपनी दादी से पता चलता है उनके खानदान में पहले उपर्युक्त कुप्रथा प्रच लत थी। उनका कुल 'बेदी कुल' था जो गुरु परिवार होता है। इस कुल की लड़ कयाँ गुरु परिवार की बेटियाँ होती थीं, इस कारण कोई भी उन्हें अपनी बहू नहीं बनाता था, क्यों क उन्हें लगता था क इनसे घर का काम करवाने पर उन्हें पाप लगेगा। ऐसे में गुरु परिवार बेटियों को मार डालता था। ले खका को पता चलता है क उनकी तीनों बुआएँ बेदी कुल की प्रथम जी वत छोड़ दी गई बेटियाँ थीं।

'आपहुदरी' में स्त्री-स्वातंत्र्य ले खका के प्रेम-प्रसंगों के माध्यम से भी दिखाई देता है। पतृसत्तात्मक समाज-व्यवस्था स्त्री की प्रेम-भावनाओं पर तमाम तरह की बंदिशे लगाती रही है। कन्तु, ले खका प्रेम भी करती है और उसके लए समर्पण और साहस का भी परिचय करती है। उनका प्रेम धर्म और जाति की दीवारें तोड़ता हुआ भी दिखायी देता है। ले खका का प्रथम प्रेम एक मुस्लिम युवक हमीद होता है। वे अपने प्रेम के लए क्या कुछ कर सकती हैं, इसका पता दंगों के दौरान चलता है जब अपने प्राणों की परवाह कए बिना वे कसी तरह दंगों के बीच हमीद और उसके परिवार को सुर क्षत शरणार्थी कैंप तक पहुँचवाती हैं। कालान्तर में उन्हें अम्बाला में रहना पड़ता है। वहाँ वे वेदप्रकाश नाम के युवक में अपने जीवन साथी को देखती है। उनके प्रेम-संबंध का पता जब उनकी माँ और शक्षक को चलता है तो उनपर अंकुश लगाने का प्रयत्न कया जाता है। उन्हें लु धयाना के 'गवर्मेन्ट वीमेन्स कॉलेज' में भेज दिया जाता है। वहाँ छात्रावास में रहते हुए भी वे पत्राचार के माध्यम से वेदप्रकाश से संपर्क बनाए रखती हैं। एक दिन कॉलेज के प्रं सपल के हाथ एक पत्र लग जाता है। रम णका गुप्ता दृढ़तापूर्वक इस स्थिति का सामना करती है और प्रं सपल के प्रश्नों का उत्तर देती हैं जिससे स्वातंत्र्य-भावना से युक्त उनके स्त्री-व्यक्तित्व का पता चलता है-

" प्रं सपल- 'प्रकाश कौन है?'

रम णका गुप्ता-'वह मेरा फयांसी है, मैं उनसे प्रेम करती हूँ, ववाह भी उसी से करुँगी।'

प्रं सपल- 'तुम्हारे माता-पता की रजामंदी है।'

रम णका गुप्ता- 'मेरा पैसला है। इसमें उनकी रजामंदी हो या न हो, मैं बा लग हूँ"[6]

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 3, March 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

अपनी इस आत्मकथा में रम णका गुप्ता एक ऐसी स्त्री के रूप में दिखायी देती हैं जो सामाजिक बंधनों को तोड़ती हैं और अपना रास्ता स्वयं तय करती हैं। उन्होंने लखा भी है-

"नदी को न पत्थर बाँध सकते हैं, न बांध। नदी तब तक नहीं रुकती जब तक उसका पानी का स्रोत खत्म नहीं हो जाता और मैंने अपने भीतर की स्त्री के स्रोत को कभी खत्म नहीं होने दिया, चूं क मैं उसे नदी मानती हूँ, जिसमें सब अपनी गंदगी धोकर चले जाते हैं, पर वह सतत स्वच्छ अबाध गति से बहती रहती है। फर भला मेरी स्त्री कैसे उन रूढ़ियों या बंधनों से बंधकर खुद को गदला होने देती, जिन्हें मैंने हमेशा नकारा और तोड़ा"[7]

वे एक ऐसी स्त्री हैं जो अपनी शर्तों पर जीवन जीती हैं न क पतृसत्तात्मक समाज द्वारा थोपी गई शर्तों पर। वे तमाम तरह के पारिवारिक और सामाजिक अत्याचारों एवं बंधनों का सामना करते हुए अपना मार्ग चुनने और बनाने का प्रयत्न करती हैं। वे लखती हैं-"हाँ, मैं रमना हूँ।...मुझे बदलाव प्रय है, हालां क मैं अब भी भीतर से कहीं रमना ही हूँ। वहीं रमना-कहीं अकेली खेलती, कहीं अकेली दौड़ती, कहीं अकेले डरती, कहीं अकेले झगड़ती और बिसूरती हुई या भीड़ में जूझती हुई, बहस करती, तर्क रखती एक दुबली-पतली मरियल-सी, सीधी-सादी भोंदू-सी लड़की। इस मुकाम पर मुझे उसे 'रमना' ने ही पहुँचाया है, जो जिद्दी, बुरी या खराब अथवा बुद्धू कहलाने पर भी हँस या मुस्करा देती थी, पर अपनी बात पर अड़ी रहती थी।"[8]

इस प्रकार 'आपहुदरी' स्त्री वमर्श से अनुप्रा णत एवं स्त्री-स्वातंत्र्य-बोध से अनुस्यूत कृति है। यदि इस आत्मकथा में रम णका गुप्ता पतृसत्तात्मक समाज-व्यवस्था पर गहरी चोट करने का साहस करती हुई दिखायी देती हैं तो उसके पीछे उनका दृढ़ संकल्प से युक्त स्त्री-व्यक्तित्व है। उनके इस व्यक्तित्व को हम उनकी निम्न ल खत पंक्तियों में ल क्षत कर सकते हैं। उन्होंने लखा है-

"मैंने सत्य की इसी रहस्यमयी मारक और वध्वसंक शक्ति का प्रयोग कया अपने खलाफ खड़ी सामाजिक परम्पराओं, रूढ़ियों और तथाक थत संस्कारों की बाढ़ से उबरने के लए। बहुत हमले हुए, बहुत आरोप लगे, लांछन उछाले गये। मैंने उन्हें स्वीकार नहीं कया और वा पस उसी समाज को लौटा दिया। बूमरैंक कर गये उसके सब उन्हीं पर। मैं अगली मुहिम के लए फर से उठ खड़ी होती रही।"[9]

अपने इसी व्यक्तित्व के कारण समाज में रम णका गुप्ता एक ले खका, कवयित्री, राजनेता और समाज से वका के रूप में महत्त्वपूर्ण पहचान बना पाती हैं। वस्तुत: स्त्री-स्वातंत्र्य की खोज रम णक गुप्ता के व्यक्तित्व और उनकी इस आत्मकथा दोनों का ही केंद्रीय पक्ष है।

संदर्भ:

1. आपहुदरी, पृ. **33**

2. वही, पृ. **70**

3. वही, पृ. **37**

4. वही, पृ. **77-78**

5. वही, पृ. **19-20**

6. वही, पृ. **196**

7. वही, पृ. **14**

8. वही, पृ. **13**

9. वही, पृ. **18**